“कोई चमत्कार कर सकता है, फिर भी स्वर्ग क्यों नहीं जा सकता?”

प्रश्न: कोई व्यक्ति शैतानों को बाहर निकालता है, प्रार्थना से बीमारों को ठीक करता है, परमेश्वर की आवाज़ सुनता है, दूसरों के बारे में दिव्य रहस्य प्रकट करता है, और यहां तक कि छिपी हुई बातें उजागर करता है — फिर भी स्वर्ग में प्रवेश क्यों नहीं करता? क्या यह परमेश्वर के साथ उसकी निकटता का संकेत नहीं है?

उत्तर: यह एक गहन और महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसका सरल उत्तर है: आध्यात्मिक वरदान उद्धार के समान नहीं होते। केवल इसलिए कि परमेश्वर किसी को शक्तिशाली कार्य करने के लिए उपयोग करता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति परमेश्वर के साथ सही संबंध में है या उसे अनन्त जीवन का आश्वासन है।

परमेश्वर अपनी कृपा और सार्वभौमिकता में सभी मनुष्यों को — यहां तक कि दुष्टों को भी — कई अच्छे वरदान देता है। यीशु ने कहा:

“वह अपनी सूर्य को बुरे और अच्छे दोनों पर उगाता है और धर्मी
और अधर्मी दोनों पर वर्षा करता है।” — मत्ती 5:45 (लूथर 2017)

चमत्कार, दर्शन या परमेश्वर की आवाज़ सुनना आध्यात्मिक

“कोई चमत्कार कर सकता है, फिर भी स्वर्ग क्यों नहीं जा सकता?”

परिपक्वता या उद्धार का स्वतः प्रमाण नहीं है। आध्यात्मिक वरदान किसी व्यक्ति में प्रभावी हो सकते हैं, भले ही आत्मा का फल अनुपस्थित हो। जैसा लिखा है:

“परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धैर्य, दया,
अच्छाई, विश्वास, नम्रता, आत्मनियंत्रण है।” — गलातियों 5:22-23 (लूथर 2017)

आध्यात्मिक वरदान जैसे चंगाई, भविष्यद्वाणी और चमत्कार पवित्र आत्मा द्वारा वितरित होते हैं, जैसे वह चाहता है (1 कुरिन्थियों 12:4-11)। ये कलीसिया के निर्माण के लिए होते हैं — व्यक्तिगत धार्मिकता का प्रमाण नहीं। एक व्यक्ति चमत्कार कर सकता है और फिर भी उसका हृदय परमेश्वर से दूर हो सकता है।

यीशु ने कहा:

“परन्तु इस पर आनन्दित न हो कि आत्माएँ तुम्हारे अधीन हैं, परन्तु इस पर आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे
गए हैं।” — लूका 10:20 (लूथर 2017)

“कोई चमत्कार कर सकता है, फिर भी स्वर्ग क्यों नहीं जा सकता?”

सच्चा लक्ष्य शैतानों पर अधिकार नहीं, बल्कि यह है कि हमारा नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हो — जो केवल मसीह के साथ वास्तविक संबंध के द्वारा होता है (फिलिप्पियों 4:3; प्रकाशितवाक्य 20:12)।

बाइबिल की चेतावनी: आज्ञाकारिता के बिना चमत्कार

यीशु ने ठीक इस स्थिति के बारे में गंभीर चेतावनी दी:

“नहीं, जो कोई मुझसे कहे, ‘हे प्रभु, हे प्रभु!’ वह स्वर्गराज्य में प्रवेश करेगा, परन्तु वही जो मेरे
स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है। उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, ‘हे प्रभु, हे प्रभु! क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की? क्या हमने तेरे नाम से शैतानों को
बाहर नहीं किया? क्या हमने तेरे नाम से बहुत से चमत्कार
नहीं किए?’ तब मैं उन्हें स्पष्ट रूप से कहूँगा, ‘मैंने
तुम्हें कभी नहीं जाना; तुम दुष्टों, मुझसे दूर हो जाओ।'” — मत्ती 7:21-23 (लूथर 2017)

ये शब्द निर्णायक हैं। वे दिखाते हैं कि यीशु के नाम से सेवा और चमत्कार स्वर्गराज्य में प्रवेश की गारंटी नहीं देते। निर्णायक है: पिता की इच्छा पूरी करना — आज्ञाकारिता, पवित्रता और प्रेम में जीना (1 पतरस 1:15-16; यूहन्ना 14:15)।

“कोई चमत्कार कर सकता है, फिर भी स्वर्ग क्यों नहीं जा सकता?”

पुराने नियम का उदाहरण: झूठे भविष्यद्वक्ताओं द्वारा वास्तविक चमत्कार

“यदि तुम्हारे बीच कोई भविष्यद्वक्ता या स्वप्नद्रष्टा उठे
और तुम्हें कोई चमत्कार या चिह्न दिखाए, और वह चमत्कार घटित
हो जाए, और वह कहे, ‘आओ, हम अन्य देवताओं के पीछे चलें …’ तो
तुम उस भविष्यद्वक्ता की बात न सुनना … क्योंकि यहोवा तुम्हारी परीक्षा करता है, ताकि यह जान सके कि तुम उसे अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण आत्मा से प्रेम करते हो।” — व्यवस्थाविवरण 13:2-4 (लूथर 2017)

यदि कोई वास्तविक चमत्कार करता है — परन्तु वह परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वास की ओर नहीं ले जाता, तो वह झूठा भविष्यद्वक्ता है। परमेश्वर ऐसे परीक्षणों की अनुमति देता है ताकि हमारा हृदय प्रकट हो सके।

आध्यात्मिक वरदान बिना फल के खतरनाक हैं

व्यक्तिगत वरदान हो सकते हैं — परन्तु आत्मा का फल (प्रेम, धैर्य, विनम्रता, आत्मनियंत्रण) के बिना वे आसानी से घमंड, हेरफेर या झूठी सुरक्षा का कारण बन सकते हैं। इसलिए पौलुस ने लिखा:

“कोई चमत्कार कर सकता है, फिर भी स्वर्ग क्यों नहीं जा सकता?”

“और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकता और सभी रहस्यों और सभी
ज्ञान को जानता और यदि मेरे पास विश्वास है, यहाँ तक कि
पहाड़ों को स्थानांतरित कर सकता हूँ, और यदि मेरे पास प्रेम नहीं है, तो मैं कुछ भी नहीं हूँ।” — 1 कुरिन्थियों 13:2
(लूथर 2017)

उद्धार का सच्चा चिन्ह शक्ति नहीं, बल्कि परिवर्तन है — एक ऐसा जीवन जो मसीह के चरित्र के अनुरूप है।

दो निर्माणकर्ता (मत्ती 7:24-27)

यीशु दो व्यक्तियों की तुलना करते हैं — दोनों उसकी बातों को सुनते हैं।

एक आज्ञाकारिता करता है — वह चट्टान पर घर बनाता है। जब तूफान आता है, उसका घर खड़ा रहता है।
दूसरा आज्ञाकारिता नहीं करता — वह बालू पर घर बनाता है। जब तूफान आता है, उसका घर गिर जाता है।

यह कहानी दिखाती है: अनन्त जीवन का असली कारण मसीह के वचन के प्रति आज्ञाकारिता है — सेवा या वरदान नहीं।

धोखा मत खाओ — न तो अपनी आध्यात्मिक वरदानों से और न ही दूसरों के वरदानों से। वरदान हो सकते हैं, भले ही हृदय परमेश्वर से दूर

“कोई चमत्कार कर सकता है, फिर भी स्वर्ग क्यों नहीं जा सकता?”

हो।

महत्वपूर्ण यह है: मसीह में बने रहना, उसके वचन के प्रति आज्ञाकारिता करना और एक पवित्र जीवन जीना — पवित्र आत्मा में।

“परन्तु इस पर आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे
गए हैं।” — लूका 10:20 (लूथर 2017)

यह असली लक्ष्य है: केवल चमत्कार करना नहीं, बल्कि यीशु द्वारा पहचाना जाना।

आशीर्वादित रहो — और उसके वचन में विश्वासयोग्य बने रहो।

—

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp